।। न हि ज्ञानेन् सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।।

सांगरुल शिक्षण संस्था, सांगरुल संचलित

स. ब. खाडे महाविद्यालय, कोपार्डे

ता. करवीर, जि. कोल्हापुर (महा.)

THE PORTRAYAL OF SUBALTERNS IN INDIAN LITERATURE

ISBN : 978-81-927211-9-6

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

दि. २० फरवरी २०१८

हिन्दी कथा साहित्य में उपेक्षित समाज

हिन्दी कविता में उपेक्षित समाज

(नारी, दलित, किसान, मजदूर, अनाथ बालक के संदर्भ में)

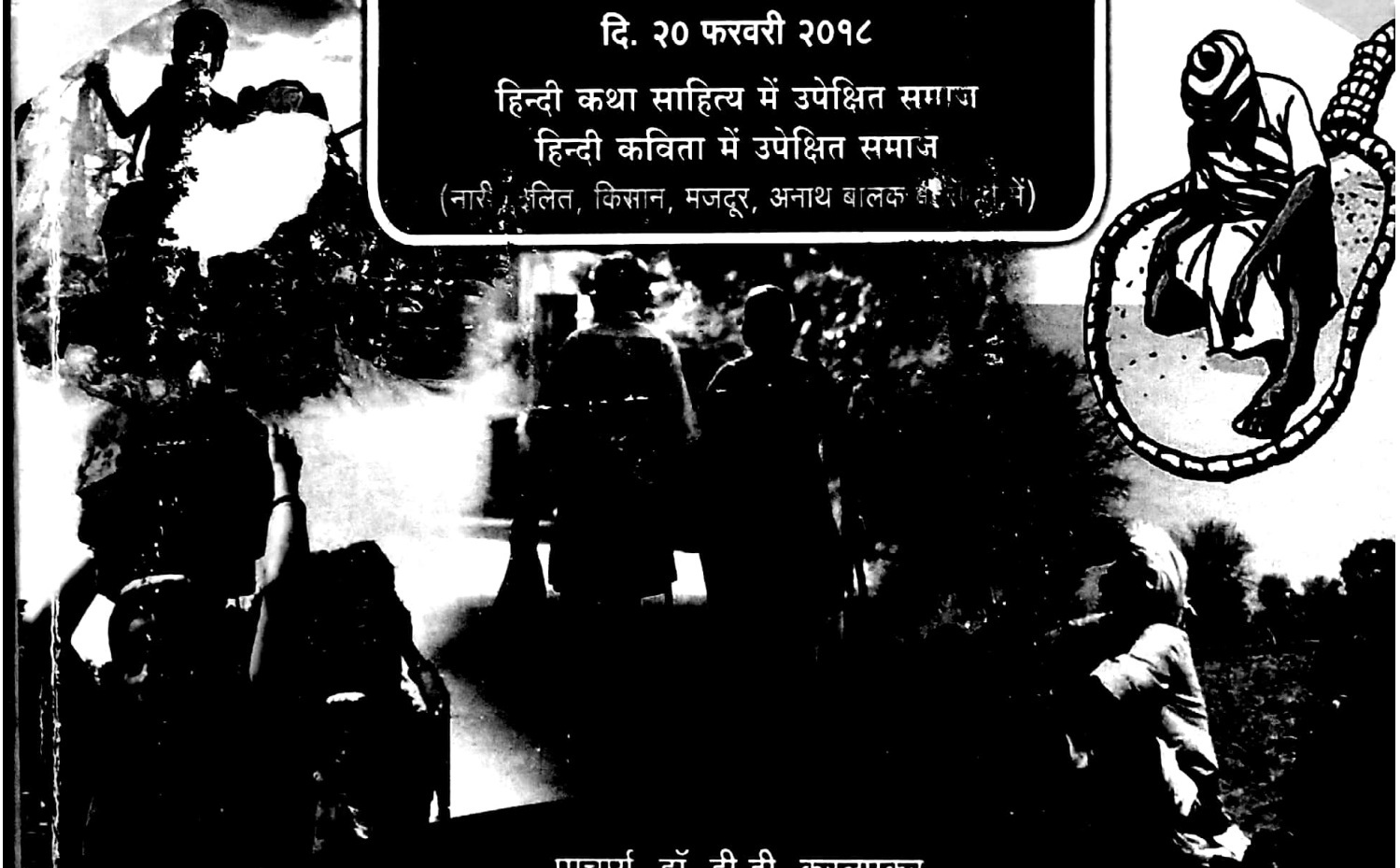

प्राचार्य, डॉ. डी.डी. कुरलपकर

संपादक
प्रा. सुहास चौगले
(सह समन्वयक)

सह संपादक
प्रा. श्रीमती एस.के. पाटील
(हिन्दी विभाग प्रमुख)

शोधप्रपत्र पुस्तिका

संयोजक : हिन्दी विभाग, स.ब.खाडे महाविद्यालय, कोपार्डे

Scanned by CamScanner

ISBN : 978-81-927211-9-6

SANGRUL EDUCATION SOCIETY'S

S.B.KHADE MAHAVIDYALAYA, KOPARDE,

TAL KARVEER DIST. KOLHAPUR

PROCEEDING

A ONE DAY

NATIONAL SEMINAR

THE PORTRAYAL OF SUBALTERNS IN INDIAN LITERATURE

TUESDAY , 20TH February, 2018

Edited by

Prin. Dr. D.D.Kurlapkar **Prof. S.V.Sutar** **Prof. S.B. Raut**

Prof. S.S. Chougale

Scanned by CamScanner

©Editor

Sangrul Shikshan Sanstha, Sangrul's
S.B. KHADE MAHAVIDYALAYA, KOPARDE
TAL. KARVEER, DIST. KOLHAPUR 416 204.

ISBN: 978-81-927211-9-6

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or any information storage and retrieval systems without permission in writing from the copyright owners.

DISCLAIMER

The authors are solely responsible for the contents of the papers compiled in this volume. The publishers or editors do not take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are purely unintentional and readers are requested to communicate such errors to the editors or publishers to avoid discrepancies in future.

Publisher:

PraRup Publications
Kolhapur. (Maharashtra)
Pin – 416 008

Scanned by CamScanner

अ.न.	प्रपत्र का नाम	पपत्र लेखक	पृष्ठ क्र.
12	'विजन' शहरी जीवन की वास्तविकता को चित्रित करती हिंदी कहानियाँ	प्रा.डॉ.नजीम शेख	55
13	आम जनता के कवि नागार्जुन	प्रा.शंकर दलवी	58
14	पुरुष प्रधान व्यवस्था में अधिकारों से वंचित नारी	प्रा. वसुंधरा जाधव	63
15	हिंदी कथा साहित्य में उपेक्षित समाज	प्रा.डॉ.कृष्णात आनंदराव पाटील	68
16	दलित जीवन की वास्तविकता को चित्रित करती हिंदी कहानियाँ	प्रा.डॉ.मिलिंद सालवे	76
17	इक्कीसवीं सदी के हिंदी साहित्य में वृद्ध विमर्श	प्रा.श्रीमती पी.व्ही.गाडवी	84
18	'किन्नर कथा'उपन्यास में व्यक्त किन्नरों की व्यथा	प्रा.विभा लाड	87
19	संजीव के फांस' उपन्यास में उपेक्षित किसान वर्ग का चित्रण	प्रा.डॉ.गजानन चव्हाण	91
20	'पहला पड़ाव उपन्यास में प्रतिबिंबित मजदूरों का शोषित जीवन	प्रा.डॉ.संदीप जोतीराम किर्दत	96
21	हिंदी कविता में उपेक्षित समाज	प्रा.डॉ.दीपक रामा तुपे	103
22	हिंदी साहित्य में नारी विमर्श 'दोहरा अभिशाप' के विशेष संदर्भ में	प्रा.स्नेहलता कांबले	109
23	हिंदी साहित्य में किसान का उपेक्षित जीवन	प्रा.प्रकाश निकम	115
24	शशि सहगल की कविता में 'मृगतृष्णा' की सीमा	प्रा.सुचित्रा भोसले	121

Scanned by CamScanner

हिंदी कविता में उपेक्षित समाज

डॉ. दीपक रामा तुपे
हिंदी विभाग स्नातक तथा स्नातकोतर
दत्ताजीराव कदम आर्टस्, साइन्स एंड कॉमर्स,
इचलकरंजी–416115
मोबाइल : 8805282610

उपेक्षित समाज का वैचारिक आधार महात्मा बुद्ध, महात्मा फुले, डा'. बाबासाहब आंबेडकर का जीवन संघर्ष रहा है। इससे प्रेरणा पाकर वंचित साहित्यकारों ने अपने अधिकार के लिए विभिन्न साहित्यिक आंदोलन चलाए। वस्तुतः ये आंदोलन जातिविहीन समाज की रचना के साथ सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक समताधिष्ठित समाज निर्मिति के लिए चलाया गया। इसके बावजूद आज भी किसान, दलित, नारी, आदिवासी, मजदूर, अनाथ बालक जैसे वर्ग उपेक्षित एवं वंचित जीवन जी रहा है। उन्हें न समाज में स्थान मिला है और न साहित्य में। कुछ चुनिंदा साहित्यकारों ने अपने साहित्य में उपेक्षित समाज को स्थान दिया है, उनकी वेदनाओं का स्वर मुकरित किया है। किसान, दलित, नारी, आदिवासी, मजदूर, अनाथ बालक आदि उपेक्षितों की गाथा हिंदी कवियों ने पूरे सिद्दत के साथ रेखांकित की है। विद्रोह, प्रतिरोध एवं आक्रोश के प्रतिस्वरुप उपजा साहित्य सामाजिक सरोकारों के प्रति गहन प्रतिबद्धता के साथ अभिव्यक्त हुआ है। संविधानिक प्रावधानों के चलते दलितों के साथ प्रत्यक्ष भेदभाव नजर नहीं आता, लेकिन सवर्ण समाज में उपेक्षितों के प्रति कहीं–न–कहीं मानसिक ग्रंथी है। आज भी समाज में उपेक्षितों के साथ हेय बरताव किया जाता है, उनका अपमान किया जाता है। वस्तुतः समाज के उपेक्षित, वंचित, दलित, शोषित एवं उत्पीड़ित वर्गों के संघर्षों ने ही दलित साहित्य की पृष्ठभूमि तैयार की है। परिणामस्वरुप हिंदी कवियों ने अपने काव्य में उपेक्षित, दलित एवं वंचितों की आवाज मुकरित की है।

सदियों से पीड़ित, वंचित, उपेक्षित समाज, सवर्ण समाज को खुलेआम चुनौती दे रहा है कि हे ब्राह्मण! उसे छूकर आने वाली हवा को रोक दो; जिसमें उसकी सांस भी घुलमिल चुकी है; जिससे आपका धर्म भ्रष्ट होनेवाला है, इसलिए उस हवा को रोक दो। पिछले गाँव में नदी में पिता नहाए हैं, उसे साफ कर सकते हो तो करो और यह ढकोसला छोड़ दो कि बहता पानी गंगा है। उस प्रकाश किरण को रोक दो जो उसे छूने से अपवित्र हो चुका है और आप तक पहुंचाÐ है। उस धूप और चाँदनी को रोक दो, जो समान रुप से मेरे और तेरे खेतों में बरसती है। इतना ही नहीं, तुम्हारे ऋग्वेद की ऋचाएँ पढ़ीं और

Scanned by CamScanner

सुनी है। यदि आपमें हिम्मत है तो उसके कानों में गरम–गरम पिघला शीशा डाल दो। इसी साहस का जिक्र असंग घोष की 'रोको ब्राह्मण' कविता में मिलता है। कवि ब्राह्मणों को खुलेआम चुनौती देता है; जैसे–

"तुममें हो हिम्मत तो
डालो गरम–गरम पिघला शीशा
मेरे कानों में
मैंने तुम्हारे ऋग्वेद की
ऋचाएँ पढ़ीं और सुनी हैं
रोको ब्राह्मण!
रोक सको तो।"[1]

स्पष्ट है कि उपेक्षितों का काव्य ब्राह्मणों को खुले आम चुनौती दे रहा है। वह प्रकृति प्रदत्त उपहार को रोकने की चुनौती दे रहा है, जो उसे मिलने से पहले वंचित को मिल रहा है। यहाँ तक कि उसे ऋग्वेद को पढ़ने और सुनने का साहस कर रहा है और उसे रोकने की चुनौती दे रहा है। सदियों से वंचित एवं उपेक्षित समाज के हाथ में जब लेखनी मिली तब उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से अपनी दर्दनाक कथा, व्यथा, गाथा का बेबाक बयान किया। उपेक्षित रचनाकार झाड़ू की जगह अपने हाथ में लेखनी उठा रहा है और वह व्यवस्था के ठेकेदारों को खुलेआम चुनौती दे रहा है। ठीक इसी स्थिति का प्रमाण कौशल पँवार कृत 'भंगी महिला' में मिलता है। भंगी महिला मैला ढोती है। मल–मूत्र को भंगी महिला के सिर पर स्थान मिलता है। लेकिन वही स्थान उसे जिंदगी भर नहीं मिलता। वह ऐसी बदतर स्थिति में अपनी जिंदगी जीने के लिए मजबूर है। आज वह अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो गई है। सदियों की यातनाओं का हिसाब मांगने लगी है। मल–मूत्र भरा बोझ फेंककर अपने हिस्से का खुला आसमान मांग रही है। यदि झाड़ू की जगह भंगी महिला कलम उठाती है तो सच और झूठ का पर्दाफाश हो जाएगा। इसलिए व्यवस्था के ठेकेदारों को कवि इन शब्दों में चेतावनी देता है–

"ऐ! व्यवस्था के ठेकेदारों,
अब सँभल जाओ
देखो, देखो! वे आ रही हैं
भंगी महिलाएँ
हाथ में झाड़ू की जगह
कलम उठाए भंगी महिलाएँ"[2]

स्पष्ट है कि यदि भंगी महिला हाथ में झाड़ू के बजाय कलम उठाती है तो वह सदियों के अन्याय–अत्याचार को दूर कर सकती है। उपेक्षित समाज डा'. बाबासाहब

Scanned by CamScanner

आंबेडकर के शिक्षा, संगठन और संघर्ष के मार्ग पर चलकर सामाजिक न्याय की मांग कर रहा है। वह दिन–रात मेहनत करता है, तनिक भी विश्राम नहीं करता, अथक संघर्ष कर समता, बंधुता और स्वतंत्रता पाना अपने जीवन का लक्ष्य मानता है। पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी लिखित 'जीवन लक्ष्य' कविता इसी जीवन लक्ष्य की पुरजोर हिमायत की है। स्वयं कवि के शब्दों में–

"सामाजिक न्याय का सपना साकार होगा
तुम्हारे गरुर को चूर–चूर कर
शिक्षा, संगठन और संघर्ष की आग में
एक दिन अवश्य तुम्हारा परान्नजीवी अस्तित्व
राख हो जाएगा।
अगड़े–पिछड़े और शोषक–शोषित का भेद मिट जाएगा
श्रमरत हूँ मैं रात–दिन
नहीं चाहिए मुझे तनिक भी विश्राम
करूँगा अथक संघर्ष
तुम्हारी छाती पर मूँग दलूँगा
और तुम्हारे दर्प के दर्पण को किरचे–किरचे कर
समता, बंधुता और स्वतंत्रता का पाठ पढ़ाऊँगा
यही तो है मेरा जीवन–लक्ष्य।"[3]

स्पष्ट है कि आज दलितों के जीवन का लक्ष्य शिक्षित होकर संगठित बनकर अपने अधिकार के लिए संघर्ष करना रहा है, जो डॉ. बाबासाहब आंबेडकर का उपेक्षित समाज के लिए दिया गया महत्वपूर्ण संदेश है। डॉ. आंबेडकर ने नारी, दलित एवं श्रमिकों को संगठित ताकत को अवगत कराया। चवदार तालाब आंदोलन, कालाराम मंदिर प्रवेश इसके सशक्त उदाहरण है। कवि सोहनपाल सुमनाक्षर 'बाबा ने कहा था' कविता में डा'. बाबासाहब आंबेडकर की संगठन की ताकत को अवगत कराया है। स्वंय कवि के शब्दों में–

''संगठन ही शक्ति है,
विघटन विनाश है।
संगठन में ही विजय है/और
लक्ष्मी का वास है।
इसीलिए बेटो! संगठित होकर
तुम एक और एक मिलकर, संगठन की कड़ी बनाओ।
जब तुम्हारा सुदृढ़ संगठन होगा
तब न कहीं तुम्हारा दमन होगा

Scanned by CamScanner

अन्यायी, अत्याचारी सब भाग जाएँगे
फिर, समता भरा प्यार, सभी जगह तुम पाओगे।"[4]

संगठन यदि सुदृढ़ है तो उपेक्षितों का दमन नहीं होगा, जबकि अन्यायी एवं अत्याचारी भाग जाएँगे और समता का व्यवहार सभी जगह मिल जाएगा, इसमें संदेह नहीं। वंचित एवं उपेक्षित समाज जंग नहीं चाहता जबकि शांति से जीना चाहता है। वह विनाश नहीं बल्कि सृजन चाहता है, नवनिर्मिति चाहता है। वे युद्ध नहीं चाहते जबकि शांति चाहते हैं। रजनी तिलक 'बुद्ध चाहिए युद्ध नहीं' कविता वंचितों के इसी विचारों को रेखांकित करती है–

"हम जंग नहीं चाहते,
जीना चाहते हैं,
हम विनाश नहीं सृजन चाहते हैं
हम युद्ध नहीं
बुद्ध चाहते हैं।"[5]

स्पष्ट है कि वंचित समाज जंग और विनाश नहीं चाहता है वह केवल शांति से जीवन जीना चाहता है। यदि वंचित समाज लड़ना भी चाहता है तो असमानता या सामाजिक विषमता से लड़ना चाहता है। वह जातिविहीन समाज की मांग करता है। वह नवसृजन भी नवभाषा में चाहता है। रजनी तिलक 'वो बाँट देना चाहते हैं' कविता में वंचित समाज के इन्हीं विचारों को मुकरित करती है–

"लड़ना है हमें असमानता से
गढ़नी है भाषा, बढ़ाना है विज्ञान,
तभी बनेगा जातिविहीन समाज।"[6]

सवर्ण समाज वंचितों को जाति–व्यवस्था में बाँट देना चाहता है, मगर यह समाज जाति, धर्म, वर्ग, पंथ के नाम पर बँटना नहीं चाहता जबकि असमानता से लड़कर जातिविहीन समाज अर्थात् स्वस्थ समाज की माँग करता है। इसी वजह से वंचितों में पूर्वजन्मों का झूठा भय दूर हो चुका है। इतना ही नहीं, उनमें इन्सानियत का स्वाभिमान जाग उठा है। सोहनपाल सुमनाक्षर 'पूर्वजन्म का ढकोसला' कविता में वंचितों के इन्सानियत एवं स्वाभिमान को जगाता है; जैसे–

"मुझमें
इनसानियत स्वाभिमान
जाग उठा है और
अब पूर्वजन्मों का झूठा भय
भाग चुका है।"[7]

Scanned by CamScanner

स्पष्ट है कि उपेक्षित समाज का पूर्वजन्मों का भय समाप्त हो चुका है और वहीं इन्सानियत स्वाभिमान जाग उठा है। स्वाभिमानी शूद्र चट्टान तोड़ते हैं, लोहा पीटते हैं, जानवर के शरीर से खाल उतार सकते हैं, मिट्टी कूट सकते हैं, लकड़ी चीर सकते हैं, खदान से कोयला खींच सकते हैं, तो क्या शूद्र दमनकर्ता का सिर नहीं तोड़ सकते? उनके शरीर की खाल उतार नहीं सकते? उनकी हड्डियाँ नहीं कूट सकते? उनका गला नहीं चीर सकते? उनका हलक से जीभ नहीं खींच सकते? ये सब जरुर कर सकते हैं, लेकिन वे किसी को पीड़ा पहुँचाना नहीं चाहते, लेकिन खुद पर हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज तो उठा ही सकते हैं। इसी स्थिति का अंकन नवेंदु महर्षि लिखित 'शूद्रों के जो हाथ' कविता में मिलता है। स्वाभिमान से जागृत शूद्र अपने अधिकार के प्रति सचेत हो गया है। वह दमनकर्ताओं को खुलेआम अपनी शक्ति का एहसास इन शब्दों में करा रहा है–

"जो हाथ खदान से कोयला खींचते हैं
क्या वे दमनकर्ता के
हलक से जीभ
नहीं खींच सकते
जरुर खींच सकते हैं
दलितों के हाथ में
शक्ति होती है
मगर वे किसी को
पीड़ा पहुँचाना नहीं चाहते
लेकिन खुद पर होते
जुल्म के खिलाफ तो
उठ ही सकते हैं।"8

स्पष्ट है कि आज उपेक्षितों को भी अपनी शक्ति का एहसास हो चुका है, वह किसी को पीड़ा नहीं पहुँचाना चाहता, मगर अन्याय के खिलाफ तो अपनी शक्ति का इस्तेमाल जरुर कर सकता है, इसलिए वह सवर्णों यानी ब्राह्मणों को खुलेआम चुनौती देता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उपेक्षित समाज अपने स्वाभिमान के प्रति जागृत हो गया है। उसे उसकी शक्ति का एहसास हो चुका है, इसलिए वह ब्राह्मणों को भी खुलेआम चुनौती दे रहा है। वह ऋग्वेद पढ़ने और सुनने में नहीं डरता। शूद्र व्यवस्था के ठेकेदारों के खिलाफ अपनी कलम उठा रहे हैं और अपनी दासतां रेखांकित करने लगे हैं। वह दिन–रात मेहनत करता है, तनिक भी विश्राम नहीं करता। वह शिक्षा, संगठन और अथक संघर्ष कर समता, बंधुता और स्वतंत्रता अपने जीवन का लक्ष्य मानता है। संगठित होकर संघर्ष करेंगे तो उपेक्षितों का दमन नहीं होगा जबकि अन्याय–अत्याचार दूर होगा और

Scanned by CamScanner

समता का व्यवहार सभी जगह मिल जाएगा। दरअसल वह जंग नहीं बल्कि अमन चाहता है। वह असमानता से लड़कर जातिविहीन समाज की स्थापना करना चाहता है। वह न किसी से डरता है और वह इन्सानियत के नाते न किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहता है, जबकि खुद पर हो रहे जुर्म के खिलाफ आवाज जरुर उठाना चाहता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. संपा. प्रीति सागर, हिंदी दलित साहित्य संचयिता, असंग घोष–रोको ब्राह्मण, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली–110 002, प्रथम संस्करण 2015, पृ.–29
2. वही, कौशल पँवार, भंगी महिला, पृ. 52
3. वही, पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी, जीवन लक्ष्य, पृ. 65
4. वही, सोहनपाल सुमनाक्षर–बाबा ने कहा था, पृ.–95
5 वही, रजनी तिलक, बुद्ध चाहिए युद्ध नहीं, पृ. 85
6 वही, रजनी तिलक, वो बाँट देना चाहते हैं, पृ. 85
7 वही, सोहनपाल सुमनाक्षर, पूर्वजन्म का ढकोसला, पृ. 99
8 वही, नवेंदु महर्षि, शूद्रों के जो हाथ, पृ. 62

.....

Scanned by CamScanner